शोध पत्र- संगीत

# उपशास्त्रीय गायन शैली: सादरा ( गायन शैली ) की सुप्रसिद्ध बंदिशे

* डॉ. नित्यप्रिया श्रीवास्तव

* डी. फिल, संगीत प्रवीण , इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

'सादरा' गायन शैली उप–शास्त्रीय गायन शैलियो में से एक है,यह ध्रुवपद अंग से द्रुत लय में गाई जाने वाली भाव पूर्ण गायन शैली है,ध्रुवपद अंग से जो गीत मध्य या द्रुत लय में झपताल में गाया जाता है उसे 'सादरा' कहते है"।[1]

विभिन्न गायन शैलियों में होरी, ख्याल गायन, ध्रुवपद, ठुमरी की तरह 'सादरा' भी एक गायन शैली है। बहुत ऐसे साधारण गायक है जो कि सादरा गायन से परिचित नहीं होंगे। 'सादरा' गायन प्रचलन में भी कम है। किन्तु 'सादरा' अपने आप में एक बहुत ही मधुर गायन शैली है।

"A genre of vocal music composed exclusively in the jhaptaal rhythmic cycle of ten beat"[2]

'सादरा' गायन के बारे में कहा जाता कि अवध दरबार के गायक 'उस्ताद दुल्हे मियाँ' ने 'सादरा' गायन आरम्भ किया । 'उस्ताद दुल्हे मियाँ' के पूर्वज आगरा घराने के 'हाजी सुजान' के सम्बन्धी थे और आगरा छोड़कर 'शाहदरा' (दिल्ली आकर बस गये। 'दुल्हे मियाँ' लखनऊ दरबार में आ गये,उनके गायन की शैली इसीलिये 'सादरा' कहलायी ।[3]

dN ^lknjk^ dh cfn'k bl çdkj gS &

jkx:ckxJh

ताल:झपताल

लय:मध्यलय

स्वरबद्ध:'विष्णु दिगंबर पुलस्कर'

गीतकार: गोस्वामी तुलसी दास

cfn'k:&

LFkk;h:

बिनती सुनो मोरी

अवधपुर के बसईया

तुम बिन कवन मोरे दुःख के हरईया

vUrjk:

जहाँ जहाँ परी भीर

तहां तहां दियो धीर

जानकीपत राम भव के तरईया

jkx:v lkojh

ताल:झपताल

लय:मध्यलय

स्वरबद्ध:'विष्णु नारायण भातखंडे'

cfn'k:&

LFkk;h:

सुमिर मन नामको

ताज सकल काम को

करत भाव पार अरु डेट हरी चरन को

vUrjk:

मृदुल चित भगवान

प्रिय भगत जस प्रान कहु मान

अब मान मन मितर धर ध्यान

jkx:Hkhe iyklh

ताल:झपताल

लय:मध्यलय

स्वरबद्ध:रामाश्रय झा 'रामरंग'

cfn'k:&

LFkk;h:

बाजत बाजा आज अवध में

जनमे जगतनाथ दसरथ भवन में

vUrjk:

गगन मगन सुर दुन्दुभी बजावे

'रामरंग' चहुँ ओर आनंद नगर में

'सादरा' गायन की ताल झपताल है यह ध्रुवपद अंग की गायकी है किन्तु इसमें ध्रुवपद गान से अधिक चंचलता होती है। सादरा में लय–बाट का काम होता है, उपज होती है जैसा कि प्रायः ध्रुवपद में देखने को मिलता है। सादरा गायन की प्रमुखता है बोलतान का प्रयोग जो कि सादरा गायन को और उत्कृष्ठ बना देता है।

'सादरा' ताल के प्रबंधों में सरगम में विविध लयों का प्रयोग कर के 'उपज ' का काम किया जाता है' [4]

mnkgj.k Lo:i:&

jkx:cxkyHkjo

ताल:झपताल

लय:मध्यलय

cfn'k:&

LFkk;h:

प्रथम सुमरण कारन

जिन दीजो गुण ज्ञान

ज्ञानी गावत गुण

ध्यानी धरत ध्यान

vrjk:

नाद अनहद भयो
तामे निकसे भेद
पुनि पायो वेद को
रागं को भेद

jkx:vHkkxh

ताल:झप ताल
लय: मध्यलय
स्वरबद्ध: 'आमिर खान'

cfn'k:&

LFkk;h:

चरण धर आये रि मोरे दया कर
आलि धन धन जागे भाग

vrjk:

धन आज कि घरी धन पल मुहुरत
मोहे लीनो अपने शरण धन सुहाग को

jkx:Hkjo

ताल:झपताल
लय:मध्यलय
स्वरबद्ध:रामतनु पांडे 'तानसेन'

cfn'k:&

LFkk;h:

आदेस इनको आदेस उनको
आदेस जिनको जनम तब मनका
आदेस सांवलिया को आदेस अम्बिया को

vrjk:

आदेस गुरुजन के गुरु को
आदेस गुनी को आदेस विद्या को
आदेस गुनी तानसेन जगत को

jkx:Hkjo

ताल:झपताल
लय:मध्यलय

cfn'k:&

LFkk;h:

अल्ला हो अल्ला जल्ले शान अल्ला
तेरा नाम लिए मेरी होवे तसल्ला

vrjk:

तू करीम तू रहीम
तू सत्तार तू गफ्फार
तेरा नाम लिए मेरी होवे तसल्ला

jkx:nldkj

ताल: झपताल
लय:मध्यलय

cfn'k:–

LFkk;h:

चिड़िया चूचबानी
चक्रवाक सुन बानी
कहत यशोदा रानी
जागो मेरे लाला

vrjk:

रवि के किरन जानी
कुमुदिनी बिकसनी
समुदीत सकुचानि
दधि मथित बाला

"A dhrupad or a hori composed specifically in jhaptal ,a tala of beats ,is called sadra .Tradition has it that two composer brothers ,shivamohan and shivnath, followers of the legendary Baiju Bawra,hailed from shahadra and the gener derives its name this place-name."[5]

jkx:duMkcgkj

ताल:झपताल
लय:मध्यलय
स्वरबद्ध:'विनायक राव पटवर्धन'

cfn'k:&

LFkk;h:

राधिका रमण गिरिधरण गोपीनाथ
मदन मोहन कृष्ण नटवर बिहारी

vrjk:

रासलीला रसिक व्रज युवति प्राणपति
सकल दु:ख हरण गो–गणनचारी

jkx:tttorh

ताल:झपताल
लय:मध्यलय

cfn'k:&

LFkk;h:

तू जय मालारानी तू मनमानी
विद्या सरस्वती वैकुंठनिसानी

vrjk:

तूही गुपत तूही प्रगट तूही जल्थल में
सकल जग मानी तू आद भवानी

jkx:nl

ताल:झपताल
लय:मध्यलय
स्वरबद्ध:शंकर राव व्यास

cfn'k:–

LFkk;h:

बंसी की धुन तोरी नित कान पर मोरी
का जाऊ तजि शाम सूझन काहे री

vUrjk:

शोभा नयन की री मृदु हसत प्रेम भरी
अति प्यारी ब्रिज नारी सुन्दर बनवारी

jkx:gehj

ताल:झपताल
लय:मध्यलय

cfn'k:&

LFkk;h:

नाद दरियाव तापे तन जहाज
कर उमंड फिर लागे री
चम्पे ढूरन ए जू

vUrjk:

सुर के बरदबान की
नेक चराबे न तापे
गुनी लाग ताने तरन ए जू

'उस्ताद मुहम्मद साहब' का एक 'सादरा' है जो 'राग मालकोश' में निबद्ध है जो निम्नवत् है–

भज मन निरंकार
जब लौ घट में प्रान
प्रगट भये कहु भेद न जाना
फब्त हाजी सुजान[6]

ध्रुवपद एवं होरी की भांति इसमें भी कविता को प्रमुख स्थान प्राप्त है। यह गायन शैली अपने आप में सुमधुर एवं जनरंजन का है किन्तु इसका प्रचार–प्रसार उतना नहीं हो सका जितना की अन्य गायन शैलियों का हुआ जैसे की ख्याल गायन, ध्रुवपद,धमार इत्यादि इसलिए धीरे–धीरे इस गायन शैली का प्रचलन अब नहीं रहा। कुछ अत्यधिक सुंदर 'सादरा' के उदाहरण इस प्रकार है –

jkx:HkSjo

ताल:झपताल
लय:मध्यलय

cfn'k:&

LFkk;h:

दालिद्र दुःखभंजन
विद्या तू रख ज्ञान
और ताल सुर की सेवा तू कर ले

vUrjk:

सप्त सुरन तीन ग्राम
गुनीयन बखान
और ताल सुर की सेवा तू कर ले ११

jkx:Hkwi

ताल:झपताल
लय:मध्यलय
स्वरबद्ध: 'ओमकारनाथ ठाकुर'

cfn'k:&

LFkk;h:

वेद थके मंत्र तंत्र थके ग्रन्थ पंथ थके

vUrjk:

देव दानव थके नाग नर मौन भये
पीर अरु मेरे पुनि धीर थाके

jkx:Hkwi

ताल:झपताल
लय:मध्यलय
स्वरबद्ध:'विष्णुनारायण भातखंडे'

cfn'k:&

LFkk;h:

करत मोहन आलाप शास्त्र के अनुसार
रागरूप के भेद सभुन परगट कर

vUrjk:

स्थायी सुर द्वयर्ध अरु अर्धस्थित अबधि कर
द्विगुण को चलन कर हरखत गुनी चतर

jkx:fcHkkl

ताल:झपताल
लय:मध्यलय

cfn'k:&

LFkk;h:

गायन विद्या के अंग ब्योरे
साध ले हॉट मातंग जा में भरत

vUrjk:

सरस्वती सुमिरन जे गुनि करियात
तबहूँ भजत अंगके रंगके चेत

jkx:nqxkZ

ताल:झपताल
लय:मध्यलय
स्वरबद्ध:'ओमकार नाथ ठाकुर'

cfn'k:&

LFkk;h:

तेरो प्रणव रूप कैसे कहाँ ध्याऊं

vUrjk:

तेज उदधी भोम ,नाद मरुत व्योम
तारे सूरज सोम ,इनमे कहाँ पाऊं

jkx:galèouh

ताल:झपताल
लय:मध्यलय
स्वरबद्ध:'ओमकारनाथ ठाकुर'

cfn'k:&

LFkk;h:

सुनिये उधो एक बिनती हमारी

vrjk:

श्यामसुंदर को बेग ले आवो
पांवे दरस नैन होवें सुखारी

jkx: lgk&dkuMk

ताल:झपताल
लय:मध्यलय

cfn'k:& LFkk;h:

हुस दालान दुब दलन
हुस गजधर रे

vrjk:

कोप जब चढ़े श्याम येती
पलक में नर्म करे आ करमा करे

jkx: [kekt

ताल:झपताल
लय:मध्यलय
स्वरबद्ध:वाजिद अली शाह 'अख्तर पिया'

cfn'k:& LFkk;h:

सुध बिसर गई आज अपने गुनन की
तुम दाता दोउ जग के खेवनहार

vrjk:

माढे मडैया छवन लागे 'अख्तर'
पीर फकीर सभी गुनी सुर नर मुनि

jkx:Njt dh eYgkj

ताल:झपताल
लय:मध्यलय
स्वरबद्ध:'विनायकराव पटवर्धन'

cfn'k:& LFkk;h:

आज नीकी बनी श्री राधिका नागरी
ब्रज युवती यूथ में रूप औ चतुराई
शील श्रृंगार गुण सबन में आगरी

vrjk:

सकल विद्या विदित रहस हरिवंश हित
मिळत नव कुञ्ज में श्याम बडभाग री

jkx: dkuMkeYgkj

ताल:झपताल
लय:मध्यलय

cfn'k:&LFkk;h:

भ्रमन भरपूरे
कुछ कुछ कहते
केते नर करे रे

vrjk:

कोप कर बरत है
आतात परबीन
केते नर करे
केते नर न करे रे

jkx:e?k eYgkj

ताल:झपताल
लय:मध्यलय
स्वरबद्ध:रामतनु पांडे 'तानसेन'

cfn'k:&LFkk;h:

प्रबल दल साजे झुक झुक भूमि पर
वृज उमड़ घन घुमड़ जहर इंद्रा भावो

vrjk:

बरसात मुसर धार हॉट प्रहार चार
कृष्णा गिरिकर धरके गोकुल बचायो
बुन्दन से धर सबकी रक्षा करत
जीव जंतु पशु पक्षी अति सुख पायो
'तानसेन' के प्रभु तुमरी गति अद्‌भुत
सुरपति अधिन होय शीस नवायो

jkx:ekydkSl

ताल:झपताल
लय:मध्यलय
स्वरबद्ध:इब्राहीम अली

cfn'k:&LFkk;h:

सा सुन्दर बदन के मंदर दीपन
मनरंजन कहे जात छिपे रे

vrjk:

निकसीक सुन्दरता कहे लाजत
अभ्र ही में मुखचन्द्र छके रे

jkx:ekydkSl

ताल:झपताल
लय:मध्यलय

cfn'k:&LFkk;h:

सखी श्याम सुन्दर आज
बंसिया बजाए सखी
धुन बंसी सुन सुनत
नमन बिसराए

vrjk:

जमुना की रुकत वारी
तरुयन की झुकत डारी
धेनु मुख घांस डारी
धुनी में मन लाये।

jkx:'kdjk

ताल:झपताल
लय:मध्यलय
स्वरबद्ध:शंकरराव व्यास

cfn'k:&LFkk;h:

जय देवी अम्बिका माय भवानी

तुव पूजन आयो दीजो परसाद ।

vUrjk:

दुरजन दलमली सुरजन को गही
ऐसी दया तेरी सुनी आयो द्वार ।।

jkx:'kdjk

ताल:झपताल
लय:मध्यलय

cfn'k:&LFkk;h:

निडर डर निवारे हो शाहे जहांगीर
बलबीर राजाराम

vUrjk:

ऐसी हट सेस कोट धावे
और नैनं सो खंजन नचावे

jkx:lkguh

ताल:झपताल
लय:मध्यलय

cfn'k:&LFkk;h:

दत्त गुरु दत्त गुरु दत्त गुरु सुमार ले
और कछु नहिं आवे अंत तोरे मना ।

vUrjk:

श्रीपाद नरसिंह सरस्वती चरण पर
क्रिश्नाजल तुलसीदल हार दे रे मना।।
कृष्णातट निकट वृक्ष छाये तले
हरिहर अवतार जग को उधारे ।।
गोपालकृष्ण के दास के शीस पर
हात धरिये महाराज मेरे गुरु ।।[7]

jkx:y{eh rkMh

ताल:झपताल
लय:मध्यलय
स्वरबद्ध:विनायक राव पटवर्धन

cfn'k:&LFkk;h:

नवल ब्रजराज को लाल ठाढो सखी
ललित संकेत वाट निकट सोहे।

vUrjk:

परम अद्भुत रूप सकल गुण भूप
यह मदन मोहन बिना कछु न भावे।।

jkx:fe;k dh rkMh

ताल:झपताल
लय:मध्यलय
स्वरबद्ध:'विनायकराव पटवर्धन'

cfn'k:&LFkk;h:

दुर्गे आद भवानी दयानी दया कर
तव पूजे सब जग मानी

vUrjk:

असुर संहारनी नग्र कोट रानी
कीजे दया वर वाकवानी ।।

jkx:iwohZ

ताल:झपताल
लय:मध्यलय
स्वरबद्ध: श्रीकृष्ण नारायण राजरत्नाकर 'सुजान'

cfn'k:&LFkk;h:

अतुल शोभा सोंझ की चित लुभावनी
निहरी हिय में हुलास अचरज आनंद भयो
रेख दूजे चन्द्रमा को उदय भयो

vUrjk:

रक्त रवि बिम्बते क्षितिज केसर केसर भयो
स्वर्ण बरन मेघतें गगन बिखरायो

lpkjh:

जैसी नयी दुल्हन लाजत मुस्कानी

vkHkkx:

मंद मंद समीर सुखद शीतल बहे
द्रुम बेली जिय जनत अखिल जग मुदित भयो

fu"d"kZ%

यह कहा जा सकता है कि यह गायन शैली अत्यंत भावपूर्ण एवं सुमधुर है । इस गायन शैली में अलग प्रकार की चंचलता एवं रस मौजूद है जो की सुनने में अत्यंत कर्णप्रिय लगती है । वर्तमान में यह गायन शैली बहुत अधिक मात्रा में प्रचलित नहीं है। यदा–कदा ही सादरा अब सुनने को मिलता है , यद्यपि यह गायन शैली अब सुनने को अधिक नहीं मिलती। किन्तु 'सादरा' उपशास्त्रीय संगीत की एक विशिष्ट गायन शैली है जिसका अपना एक अलग ही महत्व एवं स्थान है जो अन्य शैलियों से इसको अलग करता है। अतः इस गायन शैली को संजो कर रखना एवं प्रचारित करना हमारा परम दायित्व है जिससे की हिन्दुस्तानी संगीत की इस विरासत को लुप्तप्राय होने से बचाया जा सके।

## संदर्भ ग्रंथ


1. http://hi.wikipedia.org/
2. हिन्दुस्तानी म्यूजिक: अ ट्रेडिशन इन ट्रांजीशन ,दीपक राजा,डी के प्रिंट वर्ल्ड, 2005
3. भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायन शैलियों का क्रमिक विकास, श्रीमती सीमा श्रीवास्तव, पृ0 69
4. संगीत संचयन:संगीत एवं सम्बध्हा विषयों पैर लेखों का संग्रह
5. म्यूजिक कांटेक्स्ट्स: अ कांसिस डिक्शनरी ऑफ हिन्दुस्तानी म्यूजिक,अशोक दामोदर रानाडे,पृष्ठ 119
6. भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायन शैलियों का क्रमिक विकास, श्रीमती सीमा श्रीवास्तव
7. राग विज्ञान भाग २, पडित विनायक राव पटवर्धन, पेज ६५